

अन्नपूर्णा चालोसा

दोहा

विश्वेश्वर-पदपद्म की रज-निज शीश-लगाय।
अन्नपूर्णे! तव सुयश बरनौं कवि-मतिलाय॥

चौपाई 1

नित्य आनंद करिणी माता।
वर अरु अभय भाव प्रख्याता॥

चौपाई 2

जय! सौंदर्य सिंधु जग-जननी।
अखिल पाप हर भव-भय हरनी॥

चौपाई 3

श्वेत बदन पर श्वेत बसन पुनि।
संतन तुव पद सेवत ऋषिमुनि॥

चौपाई 4

काशी पुराधीश्वरी माता।
माहेश्वरी सकल जग-त्राता॥

चौपाई 5

वृषभारूढ़ नाम रुद्राणी।
विश्व विहारिणि जय! कल्याणी॥

चौपाई 6

पतिदेवता सुतीत शिरोमणि।
पदवी प्राप्त कीन्ह गिरि-नंदिनि॥

चौपाई 7

पति-विछोह दुःख सहि नहिं पावा।
योग अग्नि तब बदन जरावा॥

चौपाई 8

देह तजत शिव-चरण सनेहू।
राखेहु जात हिमगिरि-गेहू॥

चौपाई 9

प्रकटी गिरिजा नाम धरायो।
अति आनंद भवन मैंह छायो॥

चौपाई 10

नारद ने तब तोहिं भरमायहु।
ब्याह करन हित पाठ पढ़ायहु॥

चौपाई 11

ब्रह्मा-वरुण-कुबेर-गनाये।
देवराज आदिक कहि गाये॥

चौपाई 12

सब देवन को सुजस बखानी।
मति पलटन की मन मैंह ठानी॥

चौपाई 13

अचल रहीं तुम प्रण पर धन्या।
कीन्ही सिद्ध हिमाचल कन्या॥

चौपाई 14

निज कौ तब नारद घबराये।
तब प्रण-पूरण मंत्र पढ़ाये॥

चौपाई 15

करन हेतु तप तोहिं उपदेशेउ।
संत-बचन तुम सत्य परेखेहु॥

चौपाई 16

गगनगिरा सुनि टरी न टारे।
ब्रह्मा तब तुव पास पधारे॥

चौपाई 17

कहेउ पुत्रि वर माँगु अनूपा।
देहुँ आज तुव मति अनुरूपा॥

चौपाई 18

तुम तप कीन्ह अलौकिक भारी।
कष्ट उठायहु अति सुकुमारी॥

चौपाई 19

अब संदेह छाँड़ि कछु मोसों।
है सौगंध नहीं छल तोसों॥

चौपाई 20

करत वेद विद ब्रह्मा जानहु।
वचन मोर यह सांचा मानहु॥

चौपाई 21

तजि संकोच कहहु निज इच्छा।
देहैं मैं मनमानी भिक्षा॥

चौपाई 22

सुनि ब्रह्मा की मधुरी बानी।
मुख सों कछु मुसुकाय भवानी॥

चौपाई 23

बोली तुम का कहहु विधाता।
तुम तो जगके स्रष्टाधाता॥

चौपाई 24

मम कामना गुप्त नहिं तोंसों।
कहवावा चाहहु का मोसों॥

चौपाई 25

दक्ष यज्ञ महँ मरती बारा।
शंभुनाथ पुनि होहिं हमारा॥

चौपाई 26

सो अब मिलहिं मोहिं मनभाये।
कहि तथास्तु विधि धाम सिधाये॥

चौपाई 27

तब गिरिजा शंकर तव भयऊ।
फल कामना संशयो गयऊ॥

चौपाई 28

चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा।
तब आनन महँ करत निवासा॥

चौपाई 29

माला पुस्तक अंकुश सोहै।
कर मैंह अपर पाश मन मोहै॥

चौपाई 30

अन्नपूर्णे! सदापूर्णे।
अज-अनवद्य अनंत पूर्णे॥

चौपाई 31

कृपा सागरी क्षेमंकरि माँ।
भव-विभूति आनंद भरी माँ॥

चौपाई 32

कमल बिलोचन विलसित भाले।
देवि कालिके! चण्डि कराले॥

चौपाई 33

तुम कैलास मांहि है गिरिजा।
विलसी आनंद साथ सिंधुजा॥

चौपाई 34

स्वर्ग-महालछमी कहलायी।
मर्त्य-लोक लछमी पदपायी॥

चौपाई 35

विलसी सब मैंह सर्व सरूपा।
सेवत तोहिं अमर पुर-भूपा॥

चौपाई 36

जो पढ़िहहिं यह तव चालीसा।
फल पाइहहिं शुभ साखी ईसा॥

चौपाई 37

प्रात समय जो जन मन लायो।
पढ़िहहिं भक्ति सुरुचि अधिकायो॥

चौपाई 38

स्त्री-कलत्र पति मित्र-पुत्र युत।
परमैश्वर्य लाभ लहि अद्भुत॥

चौपाई 39

राज विमुख को राज दिवावै।
जस तेरो जन-सुजस बढ़ावै॥

चौपाई 40

पाठ महा मुद मंगल दाता।
भक्त मनोवांछित निधि पाता॥

समापन दोहा

जो यह चालीसा सुभग, पढ़ि नावैगे माथ।
तिनके कारज सिद्ध सब साखी काशीनाथ॥